2

दो गौरैयाँ

शिक्षक निर्देश: पाठ को रोचक बनाने हेतु सॉफ्टवेयर का प्रयोग करें।

गौरैया को किसने नहीं देखा? शहर हो या गाँव, भूरे और स्लेटी रंग की एक छोटी-सी चिड़िया हर जगह घरों के रोशनदान, दीवारों के सुराख, पेड़ों आदि में घोंसला रखते देखी जा सकती है। आइए देखें, गौरैया के एक जोड़े के साथ लेखक का क्या अनुभव रहता है।

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते थे – माँ, पिता जी और मैं। हमारे घर के आँगन में आम का एक पेड़ था। तरह-तरह के पक्षी उस पर **डेरा** डाले रहते थे।

एक दिन दो **गौरैयाँ** सीधी घर के अंदर घुस आईं। कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैठतीं, तो कभी खिड़की पर। फिर जैसे आई थीं, वैसे ही उड़ भी गईं। पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत से लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना **बिछावन** बिछा लिया है और मज़े से दोनों बैठी गाना गा रही हैं। इस पर पिता जी को गुस्सा आ गया। उन्होंने पंखे के नीचे जाकर ज़ोर से ताली बजाई, बाँहें झुलाईं, फिर खड़े-खड़े कूदने लगे। गौरैयों ने नीचे की ओर झाँककर देखा और एक साथ 'चीं-चीं' करने लगीं।

पिता जी को और भी ज़्यादा ग़ुस्सा आ गया। वे बाहर से लाठी उठा लाए। उन्होंने लाठी ऊँची उठाकर पंखे के गोले को ठोंका। 'चीं-चीं' करती गौरैयाँ उड़कर परदे के डंडे पर जा बैठीं। पिता जी लाठी उठाए परदे के डंडे की ओर लपके। एक गौरैया उड़कर रसोईघर के दरवाज़े पर जा बैठी, दूसरी सीढ़ियों वाले दरवाज़े पर।

माँ हँस दीं, "तुम तो बड़े समझदार हो जी, सभी दरवाज़े खुले हैं और तुम गौरैयों को बाहर निकाल रहे हो। एक दरवाज़ा खुला छोड़ो, बाकी दरवाज़े बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।"

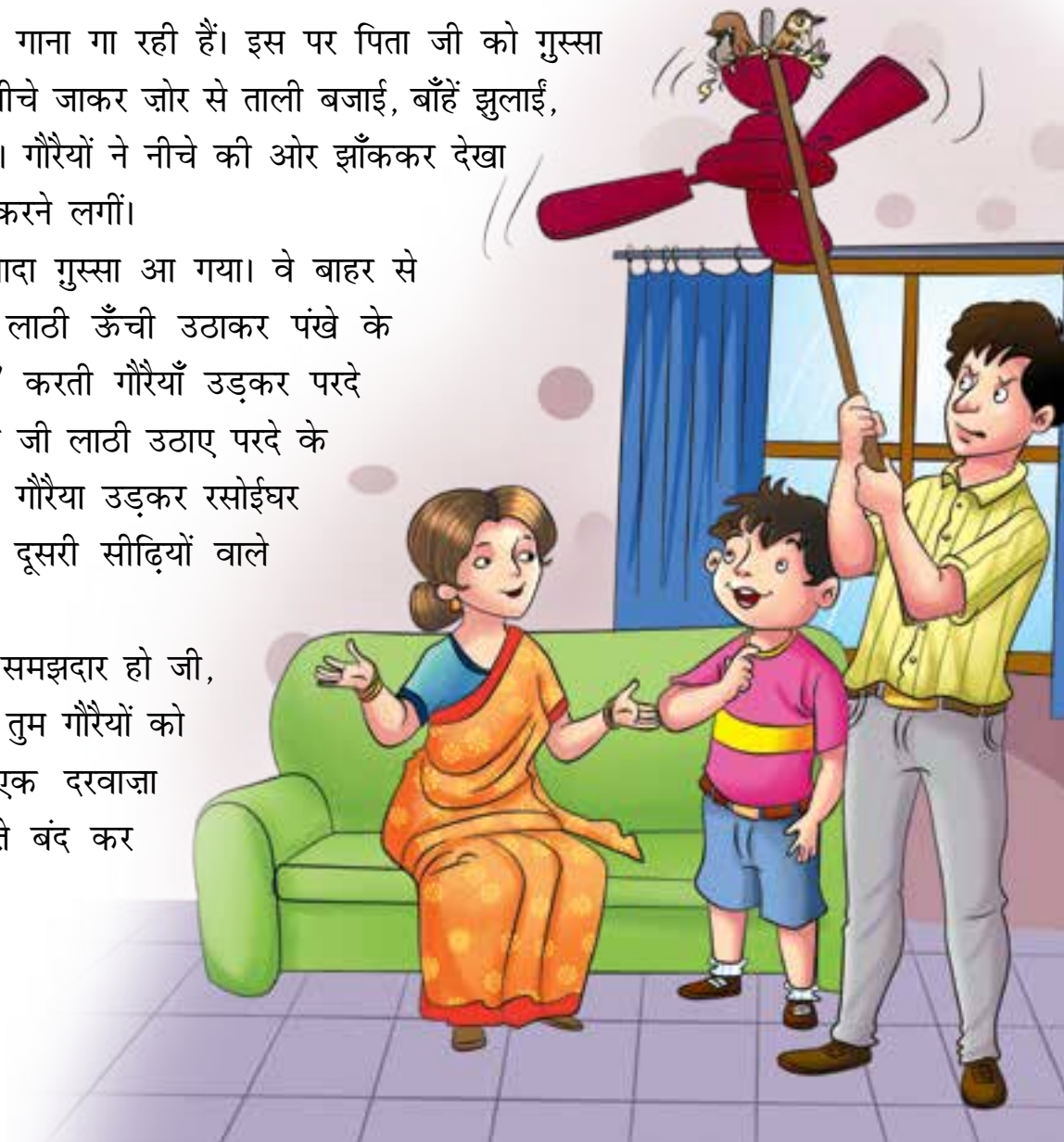

पिता जी ने मुझसे कहा, "जाओ, दोनों दरवाज़े बंद कर दो!"
मैंने भागकर दोनों दरवाज़े बंद कर दिए। केवल रसोईघर का दरवाज़ा खुला रहा।
पिता जी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया। 'चीं-चीं' करती चिड़ियाँ रसोईघर के दरवाज़े में से बाहर निकल गईं। माँ तालियाँ बजाने लगीं। पिता जी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फुलाए कुरसी पर आ बैठे।
तभी पंखे के ऊपर से 'चीं-चीं' की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा – दोनों गौरैयाँ फिर से अपने घोंसले में मौजूद थीं। इस बार वे उस रोशनदान में से आ गई थीं जिसका एक शीशा टूटा हुआ था। पिता जी ने कुरसी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूँस दिया और लाठी झुलाकर एक बार फिर चिड़ियों को **खदेड़** दिया।
दूसरे दिन इतवार था। जब हम लोग नीचे उतरकर बैठक में आए तो गौरैयाँ फिर से मौजूद थीं। पिता जी ने फिर लाठी उठा ली। उस दिन उन्हें गौरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी।
अब तो रोज़ यही कुछ होने लगा। दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं पर रात के समय जब हम सो रहे होते तो न जाने किस रास्ते से वे अंदर घुस आतीं।
पिता जी तंग आ गए थे। एक दिन कहने लगे कि यह गौरैयों का घोंसला नोचकर निकाल देंगे। वह बाहर से स्टूल उठा लाए। उन्होंने पंखे के नीचे फ़र्श पर स्टूल रखा और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए। अब पिता जी लाठी का **सिरा** घास के तिनकों के ऊपर रखकर वहीं रखे-रखे घुमाने लगे। इससे घोंसले के लंबे-लंबे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे। तभी **सहसा** ज़ोर की आवाज़ आई, "चीं-चीं, चीं-चीं!"
पिता जी के हाथ **ठिठक** गए। मैंने देखा दोनों गौरैयाँ खिड़की पर गुमसुम बैठी थीं। फिर पंखे की ओर देखा। पंखे के गोले के ऊपर से दो

नन्ही-नन्ही गौरैयाँ 'चीं-चीं' किए जा रही थीं। मानो वे अपना परिचय दे रही थीं, "हम आ गई हैं। हमारे माँ-बाप कहाँ हैं?"

मैं **अवाक** उनकी ओर देखता रहा। फिर मैंने देखा कि पिता जी स्टूल पर से नीचे उतर आए और चुपचाप कुरसी पर आकर बैठ गए। इस बीच माँ ने सभी दरवाज़े खोल दिए।

उनके माँ-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए और 'चीं-चीं' करते उनसे जा मिले। दोनों गौरैयाँ उनकी नन्ही-नन्ही चोंचों में **चुग्गा** डालने लगीं। कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर इस बार पिता जी उनकी ओर देखकर केवल मुस्कराते रहे।

–भीष्म साहनी

भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त, 1915 को रावलपिंडी (तब भारत में) में हुआ। ये एक कहानीकार एवं उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। सन 1975 में उन्हें अपनी रचना *तमस* के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा फिर 1998 में पद्मभूषण मिला। उनकी अन्य रचनाएँ हैं– *गुलेल का खेल, हनूश, कबीरा खड़ा बाज़ार में* आदि। इनका निधन 11 जुलाई, 2003 को दिल्ली में हुआ।

शब्दकोश

शब्दार्थ

डेरा – निवास (residence)
गौरैया – एक प्रकार की चिड़िया (sparrow)
बिछावन – ओढ़ने-बिछाने की चादर, तकिए आदि (bedding)
खदेड़ना – भगाना (to drive away)
सिरा – छोर (end)
सहसा – अचानक (suddenly)
ठिठकना – थोड़ा ठहरना (to stop short)
अवाक – हक्का-बक्का (dumbfounded)
चुग्गा – चिड़ियों का भोजन, दाने (grains given to birds)

नई वर्तनी-मूल वर्तनी

अंदर – अन्दर
बंद – बन्द
परदे – पर्दे
डंडा – डण्डा
कुरसी – कुर्सी
अवाक – अवाक्

अन्य भाषाओं के शब्द

मज़े, ग़ुस्सा, ज़ोर, ज़्यादा, दरवाज़ा, बाकी, आवाज़, मौजूद, रोज़, स्टूल, फ़र्श।

देखें हमने क्या सीखा

पाठ से

मौखिक (Speaking Skills)

1. इस पाठ के लेखक का क्या नाम है?
2. लेखक के घर में कितने व्यक्ति थे?
3. गौरैयाँ कहाँ जाकर बैठती थीं?
4. लेखक के पिता जी को ग़ुस्सा क्यों आया?

लिखित (Writing Skills)

लघूत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. लेखक की माँ को हँसी क्यों आ गई?

.....

2. लेखक के पिता जी ने रोशनदान में कपड़ा क्यों लगा दिया?

.....

3. लेखक के अनुसार किसने कहा, "हम आ गई हैं?"

.....

4. कमरे में फिर से क्या होने लगा?

.....

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

1. दूसरी बार प्रवेश करने के लिए गौरैयों ने क्या किया?

.....

.....

2. लेखक के पिता जी ने गौरैयों को भगाने के लिए क्या किया?

.....

.....

3. लेखक के पिता जी के हाथ क्या देखकर ठिठक गए?

.....

.....

4. दोनों गौरैयों ने अंदर आकर क्या किया?

.....

.....

पठित गद्यांश प्रश्न (Comprehension Questions)

1. **सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए–**

(क) लेखक के घर के आँगन में एक ..... का पेड़ था।

(i) आम ☐ (ii) केले ☐ (iii) अनार ☐

(ख) गौरैयाँ ..... करती परदे के डंडे पर जा बैठीं।

(i) छि:-छि: ☐ (ii) चीं-चीं ☐ (iii) चूँ-चूँ ☐

(ग) लेखक के पिता जी ने लाठी उठाकर गौरैयों पर ..... बोल दिया।

(i) हमला ☐ (ii) भागो ☐ (iii) निकलो ☐

(घ) दोनों गौरैयाँ नन्ही गौरैयों की चोंचों में ..... डालने लगीं।

(i) घास ☐ (ii) चुग्गा ☐ (iii) रोटी ☐

2. **'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए–**

(क) लेखक के परिवार में केवल चार व्यक्ति थे। ☐

(ख) तरह-तरह के पक्षी आम के पेड़ पर डेरा डाले रहते थे। ☐

(ग) गौरैयों ने रोशनदान में अपना बिछावन बिछा लिया। ☐

(घ) गौरैयों के अंडों से बच्चे निकल आए थे। ☐

3. **सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए–**

अवाक • खदेड़ • लाठी • डेरा • ठिठक

(क) तरह-तरह के पक्षी पेड़ पर ..... डाले रहते।

(ख) उन्होंने ..... ऊँची उठाकर पंखे के गोले को ठोंका।

(ग) उन्होंने एक बार फिर चिड़ियों को ..... दिया।

(घ) पिता जी के हाथ ..... गए।

(ङ) मैं ..... उनकी ओर देखता रहा।

भाषा से

1. **नीचे दिए गए शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द को अलग-अलग करके लिखिए–**

अमर	–	.....	+	.....
अनजान	–	.....	+	.....
नापसंद	–	.....	+	.....
बदनाम	–	.....	+	.....
दरअसल	–	.....	+	.....
उपदेश	–	.....	+	.....

2. **शब्दों का क्रम सही कर सार्थक वाक्य बनाइए–**

(क) दिन / इतवार / था / दूसरे .....

(ख) तंग / गए / आ / थे / पिता जी .....

(ग) झट / की / देखा / मैंने / ओर / बाहर / से .....

(घ) माँ / दिए / सभी / इस / दरवाज़े / बीच / ने / खोल .....

3. **निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्द छाँटकर लिखिए–**

	सर्वनाम शब्द
(क) वह आँगन में आम के पेड़ पर बैठ गई।	.....
(ख) वे बाहर से लाठी उठा लाए।	.....
(ग) मैंने भागकर दोनों दरवाज़े बंद कर दिए।	.....
(घ) मैं अवाक उनकी ओर देखता रहा।	.....

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, तुम, वे आदि।

मूल्यपरक प्रश्न/उच्चस्तरीय बौद्धिक कौशल (VBQs/HOTS)

मनुष्यों के लिए घर के बिना रह पाना बहुत मुश्किल होता है। अधिकतर पशु-पक्षी भी कहीं-न-कहीं आश्रय तलाशते हैं। हम अपनी ओर से ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे उन्हें हमारे कारण किसी प्रकार की समस्या न हो?

भाषा कौशल गतिविधियाँ (Subject Enrichment Activities)

रोचक क्रियाकलाप (Interesting Activities)

1. तरह-तरह के चिड़ियों के चित्र एकत्रित कर एक चार्ट तैयार कीजिए।
2. क्या आपने या आपके किसी परिचित ने कभी कोई पशु या पक्षी पाला है? अपना अनुभव एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए।

संवाद लेखन (Dialogue Writing)

नर गौरैया और मादा गौरैया के बीच इस संवाद को पूरा कीजिए।

नर गौरैया : यह जगह घोंसला बनाने के लिए उपयुक्त है।
मादा गौरैया :
नर गौरैया :
मादा गौरैया :
नर गौरैया :
मादा गौरैया :
नर गौरैया :
मादा गौरैया :

आइए लेख सुधारें (Let's Improve Handwriting)

पाठ से देखकर "पिता जी के हाथ ..... माँ-बाप कहाँ हैं?" का सुंदर लेखन कीजिए।